कठोपनिषद

कृष्ण यजुर्वेद शाखा का यह उपनिषद अत्यन्त महत्वपूर्ण उपनिषदों में एक है।

इस उपनिषद के रचयिता कठ नाम के तपस्वी आचार्य थे।

वे मुनि वैशम्पायन के शिष्य तथा यजुर्वेद की कठ शाखा के प्रवर्तक थे।

इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन - तीन वल्लियाँ हैं, जिनमें वाजश्रवा के पुत्र नचिकेता और यम के बीच संवाद है।

भर्तृ प्रपंच ने कठ और बृहदारण्यक उपनिषदों पर भी भाष्य रचना की थी।

वैसे तो कठोपनिषद और उसकी कथा सुप्रसिद्ध है, तथापि उसके कुछ तथ्य बहु - चर्चित नहीं हैं।

इस लेख में मैं उनको भी उभार रही हूँ और उपनिषद का सारांश भी दे रही हूँ।

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा के अन्तर्गत है।

इसलिए पदे - पदे इसमें यजुर्वेद के मन्त्रों की ऐसे व्याख्या मिलती है।

तथापि अन्य तीन वेदों के मन्त्र भी इसमें पाए जाते हैं।

उन सबको एकत्रित बनाती है यम और नचिकेता की कथा।

संक्षेप में कथा कुछ इस प्रकार है:-

एक बार नचिकेता के पिता उद्दालक ने विश्वजित यज्ञ किया जिसमें अपना सब-कुछ दान दे दिया जाता है।

उद्दालक मुनि ने विश्वजित यज्ञ करके अपना सम्पूर्ण धन और गौएँ दान कर दी।

जिस समय ऋत्विजों द्वारा दक्षिणा में प्राप्त वे गौएँ ले जाई जा रही थीं, तब उन्हें देखकर वाजश्रवा उद्दालक मुनि का पुत्र नचिकेता सोच में पड़ गया;

क्योंकि वे ~~अधिक~~ गौएँ अत्यधिक जर्जर हो चुकी थीं।

वे गौएँ न तो दूध देने योग्य थी, न प्रजनन के लिए ही उपयुक्त थीं।

जब वे देखते हैं कि पिताजी जीर्ण - शीर्ण गौएँ तो ब्राह्मणों को दान कर रहे हैं और दूध देने वाली मेरे लिए रख छोड़ी हैं, उसने सोचा कि इस प्रकार की गौओं को दान करना दूसरों पर भार लादना है।
इससे तो पाप ही लगेगा।

ऐसा विचार कर नचिकेता बालसुलभ चापल्य प्रदर्शित करते हुए वाजश्रवा से पूछ बैठते हैं - 'हे तात! तत कस्मै मां दास्यसि' (पिताजी आप मुझे किसको देंगे?) बालक नचिकेता का यह प्रश्न ठीक ही था, क्योंकि विश्वजित यज्ञ में सर्वस्व दान किया जाता है और ऐसे सत्पुत्र को दान किये बिना यह पूर्ण नहीं हो सकता था।

वस्तुतः सर्वस्व दान तो तभी हो सकता है जब कोई वस्तु अपनी न रहे और यहाँ पुत्र के मोह से ही ब्राह्मणों को निकम्मी और निरर्थक गौएँ भी दी जा रही थी; अतः इस मोह से पिता का उद्धार करना उनके लिए उचित ही था।

इसी तरह कई बार पूछने पर जब वाजश्रवा ने खीझकर कहा कि तुझे मृत्यु को दूँगा, तो उन्होंने यह जानकर भी की पिताजी क्रोधवश ऐसा कह गये हैं, उनके कथन की उपेक्षा नहीं की।

वचन मुख से निकलते ही वाजश्रवा को पश्चाताप हुआ, परन्तु नचिकेता अपने पिता के वचन को झुठलाना नहीं चाहता था।

उस काल में मुख से निकले वचन का महत्व हुआ करता था।

नचिकेता ने अपने पिता को समझाया, "आप पिछले समय को याद करें और आगे के समय का अनुमान लगाएँ तो पाएँगे कि फसल के समान, मनुष्य भी पकता है और पुनः उत्पन्न होता है।

इसलिए मेरी मृत्यु पर शोक न करें।

पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए नचिकेता यम के द्वार पर पहुँचता है, परन्तु यमराज उस समय प्रवासन कर रहे थे। यम की अनुपस्थिति में तीन-दिन तक भूखा - प्यासा यम के द्वार पर बैठा रहता है। कुमार नचिकेता ने यम की अनुपस्थिति में तीन - दिन भवन में न तो प्रवेश किया और न ही अन्न - पान ग्रहण किया।

तीन - दिन बाद जब यमराज लौटकर आते हैं, तब उनकी पत्नी उन्हें ब्राह्मण बालक अतिथि के विषय में बताती है। यम की पत्नी उनसे कहती है, "जिसके घर पर ब्राह्मण बिना खाए - पिए रुकता है, उसके सभी सुख और धन - वैभव नष्ट हो जाते है, यहाँ तक की उसके किए हुए पुण्य भी निरर्थक हो जाते हैं।

ऐसा करने वाला मन्दबुद्धि ही होगा। इसलिए आप कृपया करके ये अर्घ्य, पाद्य आदि, ले जाइए और अतिथि के कोप को शान्त करिए।"

यमराज बालक के पास पहुँचकर अपनी अनुपस्थिति के लिए नचिकेता से क्षमा माँगते हैं और उसे इसके लिए तीन वरदान देने की बात कहते हैं।

वे उसे उचित सम्मान देकर व भोजन आदि कराके भी सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते हैं।

तदुपरान्त नचिकेता को प्रसन्न करने के लिए, यम ने प्रत्येक रात्रि जिसके लिए वह रुका, उसके लिए एक-एक वर दिए, अर्थात् तीन वर।

नचिकेता द्वारा वरदान माँगने पर 'अध्यात्म' के विषय में उसकी जिज्ञासा शान्त करते हैं।

यमराज ने नचिकेता के पास जा उसकी पूजा करने के अनन्तर कहा - हे ब्रह्मन! तुम्हें नमस्कार है; मेरा कल्याण हो, तुम नमस्कार योग्य अतिथि होकर भी मेरे घर में तीन रात्रि तक बिना भोजन किये रहे; अतः एक-एक रात्रि के लिए एक-एक करके मुझसे

मुझसे तीन वर माँग लो।
जब यमराज ने उसे वरदान देने की बात कही, तो उसने पहला वरदान माँगा।

नचिकेता ने कहा - यदि आप वर देना ही चाहते हैं तो -

- प्रथम वर - पितृपरितोष

हे मृत्युदेव! जब मैं आपके पास से लौटकर घर जाऊँ, तो मेरे पिता क्रोध छोड़, शान्त चित होकर मुझसे व्यवहार करें। और अपनी शेष आयु में उन्हें कोई चिन्ता न सताये तथा वे सुख से सो सकें। यह मैं आपके दिये हुए तीन वरों में से पहला वर माँगता हूँ।

यमराज ने 'तथास्तु' अर्थात 'ऐसा ही हो' कहकर पहला वरदान दिया।